वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

शुक्रवार, पौष कृष्ण पक्ष, द्वितीया, कलियुग वर्ष ५१२२ (१५ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

१६ जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपरजाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-16012021

देव स्तुति

नमः कमलनाभाय नमस्तेजलशायिने।
नमस्तेकेशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तुते॥

अर्थ : उन कमलनाभाय विष्णुको नमन जो जलमें शयन करते हैं। केशवको नमन है, उन वासुदेवको नमन है!

शास्त्रवचन

यदिदं दृश्यते किंचिद् भूतं स्थावरजंगमम्।
पुनः संक्षिप्यते सर्वं जगत प्राप्ते युगक्षये॥

अर्थ : उग्रश्रवाजी कहते हैं, "हे महर्षियों ! यह जो कुछ भी स्थावर जंगम जगत दृष्टिगोचर होता है, वह सब प्रलयकाल आनेपर अपने कारणमें विलीन हो जाता है।

****

किं तस्य बहुभिर्मन्त्रैः किं तीर्थैः किं तपोऽध्वरैः।
यस्यो नमः शिवायेति मन्त्रो हृदयगोचरः॥

अर्थ : जिसके हृदयमें 'ॐ नमः शिवाय ' यह मन्त्र निवास करता है, उसके लिए बहुतसे मन्त्र, तीर्थ, तप और यज्ञोंकी क्या आवश्यकता है ?

धर्मधारा

१. उत्तम सन्तति हेतु गर्भाधान संस्कारका महत्त्व (भाग-२)

आजकल कामवासनासे ग्रस्त मनुष्य गर्भाधान संस्कारपर ध्यान नहीं देता है, जिसके चलते उसकी सन्तानका भविष्य अनिश्चित या अन्धकारमें ही रहता है। वस्तुतः यह संस्कार सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। विवाहके पश्चात पति और पत्नीको मिलकर अपनी भावी सन्ततिके विषयमें सोच-विचार करना चाहिए। बच्चेके जन्मके पहले स्त्री और पुरुषको अपनी शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यको ठीक कर लेना चाहिए। साथ ही यदि आध्यात्मिक कष्टकी तीव्रता अधिक हो तो योग्य साधना एवं सर्व आध्यात्मिक उपचारके माध्यमसे अपने कष्टको न्यून करना चाहिए। इस हेतु किसी अध्यात्मविदकी या उन्नतकी भी सहायता ली जा सकती है।

सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि बताए गए नियमों, तिथि, नक्षत्र आदिके अनुसार ही बालकके जन्म हेतु समागम करना चाहिए। यह बहुत ही पवित्र कर्म होता है; अतः इसे मात्र

कामवासनाकी तृप्तिका माध्यम नहीं बनाना चाहिए; क्योंकि विवेकशील प्राणीके सृजनकी एक सुन्दर दैवी प्रक्रिया है जिसका उत्तरदायित्व गृहस्थको ईश्वरने सौंपा है । अयोग्य सन्तान उत्पन्न करना, पृथ्वीका भूभार बढाने समान होता है। कुसंस्कारी सन्तान कुलकी मान-मर्यादाका तो नाश करती ही है साथ ही वह समाज, राष्ट्र और मानव जाति के लिए भी एक कण्टक होती है।

इसलिए सन्तति हेतु इच्छुक दम्पतिको गर्भाधान संस्कारका अच्छेसे अभ्यास करना चाहिए । इस हेतु किसी ज्योतिषीसे शुभ कालकी जानकारी ली जा सकती है।

शास्त्र कहता है कि

आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशोभिः समन्वितौ।
स्त्रीपुंसौ समुपेयातां तयोः पुतोडपि तादृशः ॥

अर्थात : स्त्री और पुरुष जैसे आहार-व्यवहार तथा चेष्टासे संयुक्त होकर परस्पर समागम करते हैं, उनका पुत्र भी वैसे ही स्वभावका होता है।

अतः इस संस्कारके महत्त्वको समझना अति आवश्यक है।

****

२. जब किसी मुसलमानके घरसे कोई सदस्य जिहादके लिए जाता है तो माता-पिता एवं अन्य कुटुम्बके सदस्य उसपर गर्वकर उनका मनोबल बढाते हैं, वहीं जब कोई हिन्दू युवा धर्मकार्य हेतु आगे बकर कुछ करना चाहता है तो उसके घरके सर्व सदस्य उसके मार्गमें अवरोध निर्माणकर, उसे हतोत्साहित करते हैं, यह मुख्य भेद है, हिन्दुओं और मुसलमानोंके धर्मप्रेममें !

३. हातुमिच्छति संसारं रागी दु:खजिहासया।
वीतरागो हि निर्दु:खसतस्मिन्नपि न खिद्यति ॥

– अष्टावक्र गीता

जो संसारमें आसक्त हैं, वे संसारका परित्याग अपने कष्टोंसे भागने हेतु करना चाहते हैं; किन्तु जो अनासक्त हैं वे दु:खोंसे मुक्त होते हैं और उन्हें संसार भी कष्टप्रद नहीं लगता है।

सुख और दु:खकी अनुभूति विषयोंकी आसक्तिसे करना होती है। जो साधनाकर अपने षड्रिपुपर विजय प्राप्त कर लेते हैं, उनका मन पर्वतकी गुफाओंमें भी स्थिर रहता है और संसारकी माया रूपी वाटिकामें भी। माया बुरी नहीं है, मायासे आसक्ति बुरी होती है।

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

स्वयंको झील बनाओ

एक बार एक नवयुवक किसी सन्तके पास पहुंचा।

"सन्तजी, मैं अपने जीवनमें बहुत कष्टमें हूं, कृपया इस कष्टसे निकलनेका उपाय बताएं !" युवक बोला।

सन्त बोले, "जलके पात्रमें एक मुट्ठी लवण (नमक) डालो और उसे पीयो !" युवकने ऐसा ही किया।

"इसका स्वाद कैसा लगा ?" सन्तने पूछा।

"असहनीय, नितान्त खारा।" युवक थूकते हुए बोला।

सन्त मुस्कुराते हुए बोले, "एक बार पुनः अपने हाथमें एक मुट्ठी 'नमक' ले लो और मेरे पीछे-पीछे आओ !"

दोनों धीरे-धीरे आगे बढने लगे और थोडी दूर जाकर स्वच्छ जलसे बनी एक झीलके सामने रुक गए।

"चलो, अब इस 'नमक'को जलमें डाल दो !" सन्तने निर्देश दिया। युवकने ऐसा ही किया।

"अब इस झीलका जल पियो !" सन्त बोले।

युवक जल पीने लगा।

एक बार पुनः सन्तने पूछा, "बताओ, इसका स्वाद कैसा है, क्या अभी भी तुम्हे ये खारा लग रहा है ?"

"नहीं, ये तो मीठा है, बहुत अच्छा है ", युवक बोला।

सन्त युवकके निकट बैठ गए और उसका हाथ थामते हुए बोले, "जीवनके दुःख भी 'नमक'की भांति हैं; न इससे कम, न अधिक; परन्तु हम कितने दुःखका स्वाद लेते हैं, ये इसपर निर्भर करता है कि हम उसे किस पात्रमें डाल रहे हैं ? इसलिए जब तुम दुःखी हो तो केवल इतना कर सकते हो कि स्वयंको बडा कर लो, पात्र मत बने रहो, झील बन जाओ !"

घरका वैद्य

अजवाइन (भाग-५)

मद्यका व्यसन छुडानेके लिए : जब भी मदिराका सेवन करनेको मन करे, चुटकीभर अजवाइन चबाएं, जबतक मदिरा सेवनकी इच्छा समाप्त नहीं हो जाए, अजवाइन चबाते रहे और इसका रस चूसते रहे, कुछ दिन ऐसा करनेसे मद्यकी वृति छूट जाएगी।

गठियाके उपचारमें लाभदायक : औषधीय गुणोंसे भरपूर अजवाइन गठियाके उपचार करनेमें सहायक होता है। अजवाइनमें २ प्रकारके विशेष गुण होते हैं, जो उन्हें गठियाके प्रभावको कम करनेमें सक्षम बनाते हैं। अजवाइनमें 'एंटीबायोटिक' गुण होते हैं जो लालिमाको कम करते हैं और

'सूजन'से राहत दिलाते हैं । दूसरा गुण संवेदनशीलताका गुण है, जो पीडा और 'सूजन' दोनोंसे लाभ दिलाता हैं । गठियाके घरेलू उपचारके लिए अजवाइनका उपयोग किया जा सकता हैं । इसके लिए आप अजवाइनके बीजोंको पीसकर चूर्ण बना लें ! इस चूर्णको जलमें मिलाकर लेप बनाएं और अपने जोडोंमें लगाएं ! विकल्पके रूपमें आप एक खुले पात्रमें अजवाइनके बीज डालें और बीजोंके फूलनेके पश्चात अपने जोडोंको पात्रमें डुबोएं ! यह गठियाकी पीडा और 'सूजन' दोनोंसे लाभ दिलानेमें सहायता करता है ।

अजवाइनकी 'चाय'से श्वासरोगका उपचारकरें : यदि आप श्वासरोगके (दमेके) रोगी हैं तो अजवाइनके क्वाथका सेवन करें ! प्रभावी ढंगसे बनी अजवाइनकी 'चाय' 'दमे'का उपचार कर सकती है । इसके लिए आप १ कप पानीमें अजवाइनके कुछ बीज लें और इसे उबालें ! इसके पश्चात इसे छानकर इसका सेवन करें ! अतिरिक्त स्वाद और लाभ बढानेके लिए आप इसमें मधु भी डाल सकते हैं । यह 'ब्रोंकाइटिस' और 'दमे'के उपचारमें तुरन्त लाभ देता है ।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

लेखिका अरुन्धति रॉयने किसान आन्दोलनको बताया नक्सलियोंके सङ्घर्ष समान

देहली सीमापर हो रहे किसान आन्दोलनमें अब भारत विरोधी लेखिका अरुन्धति रॉय भी सम्मिलित हो गई है । बहादुरगढके एक किसान धरना प्रदर्शन स्थलपर उपस्थित होकर अरुन्धति रॉयने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि वे उनसे मिलने इसलिए आई है; क्योंकि 'मीडिया' उन्हें

आतङ्कवादी घोषित कर चुकी है। वास्तविक सत्य यह है कि 'मीडिया'ने सदैव किसानोंका समर्थन किया है। अरुन्धति रॉय कहती है कि सम्पूर्ण देशके किसानोंको देहलीकी सीमापर देख लोग अपना विश्वास टटोल रहा है। उसने कहा कि किसान उन वास्तविकताओंको धरातलपर ले आया है, जिसके विषयमें उसके जैसे लेखक पिछले २० वर्षोंसे लिख रहे हैं। उसने पूर्वमें नक्सलियोंको 'बन्दूकके संग गांधीवाद'की उपमा दी थी। उसने वक्तव्यमें यह भी कहा कि शासन किसानोंके संग वही कर रहा है, जो बस्तरमें नक्सलियोंके साथ किया। आदिवासियोंके जल, वन तथा भूमिको छीन लिया, वैसा ही शासन किसानोंके साथ कर रहा है।

यह वक्तव्य कितना हानिकारक हो सकता है; यह पहाड सिंहके २०१८ को 'ऑप इण्डिया'को दिए साक्षात्कारसे ज्ञात होता है। पहाड सिंहने बताया कि ये बुद्धिजीवी आदिवासियोंको भ्रमित कर रहे हैं। नक्सली आदिवासियोंसे सम्पर्क करके उन्हें बताते हैं कि शासन भ्रष्ट है, तथा आदिवासियोंको उपजीविका हेतु चाकरी देनेमें असमर्थ है। पहाड सिंहने बताया कि नक्सली नेताओंकी कथनी व करनीमें बहुत अन्तर है। ये लोग ऐसे आदिवासियोंको शस्त्र देकर नक्सली बनाते हैं, जिनका नगरीय विकाससे कोई सम्बन्ध नहीं। पहाड सिंहने स्वयं कभी जीवनमें रेलगाडीभी नहीं देखी थी। उसने बताया था कि आदिवासीयोंको यह तक ज्ञात नहीं होता कि गांवका मुखिया कौन है ? तो 'माओ'की विचारधारा उन्हें क्या ज्ञात होगी ? उन्हें मात्र जल, वन, भूमिके नामपर बरगलाया जाता है। नक्सली नेता वन सम्पदा तथा खनिज आदिमें अपना भाग व्यापारियोंसे प्राप्त करते हैं। निम्न स्तरके

नक्सलियोंको न कोई वेतन मिलता है, न कोई लाभ । उन्हें अग्रसरकर माओवाद हेतु उनका प्रयोग किया जाता है ।

उल्लेखनीय है कि किसान आन्दोलन खालिस्तानियों, 'बिचौलियों', वामपन्थियों तथा 'पीएफआई' जैसोंके समर्थन तथा प्रवेशके उपरान्त अपनी विश्वसनीयता खो चुका है । अब इन्हें भ्रमितकर अरुन्धति रॉय पहुंच गई है ।

यह सभी मात्र मोदी शासनकी उपेक्षा करनेके उद्देश्यसे वहां उपस्थित हैं । इनमेंसे कोई समाधानका इच्छुक नहीं है । देशके सर्वोच्च न्यायालयको इसमें हस्तक्षेपकर इसका समाधान करवाकर देहलीके रोके गए मार्ग खोलने चाहिए । साथ ही यह भी प्रयास करना चाहिए कि भविष्यमें ऐसे कोई भी जनसमूह आन्दोलनके नामपर मार्गोंको बाधित न कर सके । (१४.०१.२०२१)

****

स्वामी विवेकानन्दजीके जन्मदिवसके नामपर वामपन्थी मीडियाने पुनः उगला हिन्दू विरोधी विष

पाकिस्तान पोषित आतङ्की सङ्गठन 'हिजबुल मुजाहिदीन'के मुखिया रियाज नायकूका परिचय गणित शिक्षकके रुपमें करानेवाले वामपन्थी मीडियाकी एक टुकडी 'दी क्विंट' ने १२ जनवरीको स्वामी विवेकानन्दजीके जन्मदिवसपर एक लेख पुनः प्रसारित किया है, जिसका शीर्षक 'Swami Vivekananda Jayanti : Cigar-Smoking Monk Is Still Relevant' है । इस लेखमें उन्होंने स्वामी विवेकानन्दजीको 'अपरम्परागत संन्यासी' बताते हुए 'सिगार पीनेवाला' बताया, जबकि सत्य यह है कि नि:स्वार्थ भावसे अपने राष्ट्र 'भारत' और अपनी संस्कृतिसे अत्यन्त

स्नेह और प्रेम करनेवाले विवेकानन्दजीको 'दी क्विंट'ने केवल एक 'सिगार पीनेवाले भिक्षु'के रूपमें प्रदर्शित किया। उन्होंने स्वामी विवेकानन्दजीके जीवन और अच्छे विचारोंके बारेमें भी बताया है; परन्तु उनका मुख्य ध्यान हिन्दू धर्मका विरोध करते हुए स्वामीजीको 'सिगार पीनेवाला संन्यासी'की ओर था।

पूरे विश्वमें आतंककी कहानी लिखनेवाले ओसामा बिन लादेनके परिवारको लेकर 'द क्विंट'की सहानुभूति देखने योग्य रही है। लादेनको अपना पिता या पति बतानेवाली' वामपन्थी 'मीडिया'में सक्रिय आतङ्कियोंके महिमामण्डनकी रणनीतिके वाहक भले ही विदेशी समाचार माध्यम हों; परन्तु उसे उर्वरक देनेका काम भारतीय ही करते हैं। यह एक तथ्य है कि आतङ्कियोंको लेकर झूठी संवेदना जगाने और भारतके प्रति परोक्ष-अपरोक्ष रूपसे विष उगलनेवाली सूचनाएं भारतीय पत्रकारोंने ही लिखीं।

'मीडिया'पर सबसे बडा आरोप यही है कि वह अपराध या आतङ्कवादके महिमामण्डनका लोभ संवरण नहीं कर पाता। मीडियाका यही झूठा प्रचार आतङ्कवादियोके लिए प्राणवायुका कार्य करता है। यह गम्भीर चिन्ताका विषय है कि जब देश राष्ट्र विरोधी तत्त्वोंका सामना कर रहा है, तो मुख्य सन्दर्भमें मीडियाको भी अपनी भूमिकापर विचार करना चाहिए।

प्रत्येक राष्ट्रविरोधी तत्त्व, वह चाहे 'जेएनयू'में देश विरोधी उद्घोष (नारे) करनेवाले हों या हिजबुलका आतङ्की बुरहान वानी व उनके साथ 'लुटियंस पत्रकार' व 'मीडिया हाउस' खडे दिखते हैं।

हम सभी देशवासियोंको अपने विवेकका प्रयोग करते

हुए ऐसी झूठी सूचनाएं देनेवाली वामपन्थी मीडियाको इसका मुंहतोड उत्तर अवश्य देना चाहिए।

****

मेरठमें प्रसिद्ध चिकित्सककी १८ वर्षकी पुत्रीका फैजने फंसाकर मित्रोंके साथ मिलकर किया सामूहिक बलात्कार

बरेलीमें १८ वर्षकी एक लडकीके साथ उसके पुरुष मित्र फैज शेरीद्वाराअपने ४ मित्रोंके साथ मिलकर सामूहिक बलात्कार करनेका प्रकरण उजागर हुआ है। पीडिताने अपने परिवादमें (शिकायतमें) बताया है कि वो फैज शेरी नामक युवकके साथ सम्बन्धमें थी। उसने ही सारे अन्तरंग 'वीडियो' बनाए हैं और उसके पश्चात अपने ४ मित्रों उजैर अजीम, गुलमान, सैफ और उमान जाफरीके साथ मिलकर सामूहिक बलात्कार किया।

पांचों युवकोंके विरुद्ध कई महीनोंतक छात्रासे बलात्कार करनेका आरोप लगाया गया है और प्रकरण प्रविष्ट कर लिया गया है। जिहादीने उसके साथ सम्बन्ध बनानेका 'वीडियो' चित्रित कर लिया था और उसे प्रसारित करनेकी धमकी देता था।

जो जिहादी अपने समुदायकी महिलाओंका भी उत्पीडन करनेमें पीछे नहीं है, वह जिहादी अन्य सम्प्रदाय और धर्मके लोगोंके प्रति कैसा व्यवहार करेंगे ? यहां देखनेवाली मुख्य बात यह है कि जिसकी मानसिकता ही दूषित हो और जिनके सम्प्रदायमें दमन और मारकाटकी धार्मिक शिक्षा दी जाती हो, उनसे अपेक्षा भी और क्या कर सकते हैं ? इस प्रकरणमें जितना दोष बलात्कारी म्लेच्छोंका है, उतना ही लडकीका और उसके पालकोंका

भी है; क्योंकि इनकी मानसिकता जानते हुए भी वह इनके सम्पर्कमें थी और इसके अभिभावक भी अनभिज्ञ रहे ! हिन्दू अब भी सतर्क हो जाएं और अन्य बेटियोंको बचाएं ! (१४.०१.२०२१)

****

अनवर अली शेखने पत्नी पूनम चव्हाणको चलते रेलयानसे दिया धक्का, मुम्बई पुलिसने प्रविष्ट किया हत्याका प्रकरण

मुम्बई पुलिसने सोमवार, ११ जनवरीको अनवर अली शेखको उसकी पत्नी पूनम चव्हाणकी हत्याके आरोपमें पकडा है। शेखपर आरोप है कि उसने रेलमें यात्राके मध्य ३७ वर्षीय पत्नीका हाथ छोड दिया, जिससे वह रेलवे 'ट्रैक'पर गिर गई और प्राण निकल गए । शेखको एक साथी प्रत्यक्षदर्शीके साक्ष्यके आधारपर बन्दी बनाया गया है।

समाचारके अनुसार, पुलिसने बताया कि दोनोंका लगभग एक मास पूर्व ही विवाह हुआ है और हत्याका कारण अभीतक स्पष्ट नहीं है। शेख और पूनम चव्हाण कथित रूपसे पूनमकी तीन वर्षीय बेटीके साथ मानखुर्दमें एक 'चॉल'में रहते थे। बता दें कि पूनमके प्रथम विवाहसे एक बेटी थी। शेखके पास कोई स्थायी 'रोजगार' नहीं था। वह एक 'ड्राइवर'के रूपमें काम करता था । पुलिसने यह भी कहा कि 'लॉकडाउन'के मध्य दोनोंने भीख भी मांगी थी।

सोमवारको बेटीके साथ, दम्पति पनवेलमें यात्रा कर रहा था। लगभग ३:२० बजे, जब रेल चेंबूर और गोवंडीके मध्यसे निकल रही थी, महिलाने 'सपोर्ट पोल'के चारों ओर घूमना आरम्भ कर दिया।

प्रत्यक्षदर्शीने बताया घटनाका विवरण रेलमें एक सहयात्री

संगीता भालेराव यह देखकर चकित रह गई कि क्या हो रहा है ? पुलिसने बताया, "संगीता भालेराव रेलसे अपने घर जा रही थी । उन्होंने हमें बताया कि चव्हाण अपने पतिके साथ रेलमें चढी । यह निस्सन्देह घातक था; क्योंकि 'रेल' चल रही थी । वो रेलके 'सपोर्ट' 'पोल'को पकडकर खडी थी । एक समय ऐसा आया, जब चव्हाण 'रेल'से नीचेकी ओर गिरने लगी, तभी उसके पतिने उसका हाथ पकड लिया; परन्तु उसने एकाएक उसका हाथ छोड दिया, जिसके उपरान्त वह पटरियोंपर गिर गई और उसकी मृत्यु हो गई । जब रेल गोवंडी 'स्टेशन'पर रुकी, तब संगीता भालेरावने एक 'चाकरीपर नियुक्त पुलिसकर्मीको इस घटनाके विषयमें बताया, जिसके पश्चात पुलिसनें शेखको बन्दी बनाकर 'जीआरपी' थाना ले गई ।

चव्हाणका शव बादमें पटरियोंपर पाया गया था । पुलिस अधिकारीने कहा कि चेंबूर और गोवंडीके मध्य 'ट्रैक'पर कोई 'सीसीटीवी कैमरा' नहीं है और उन्हें प्रत्यक्षदर्शीपर विश्वास करना होगा । उन्होंने आगे कहा कि पुलिस चव्हाणके सम्बन्धियोंकी जांच करनेका प्रयास कर रही है कि क्या उनका पति उन्हें पीडित कर रहा था ? बच्चेको चव्हाणकी सौतेली मांको सौंप दिया गया है ।

क्या हिन्दू युवतियोंको जिहादियोंका छल समझमें नहीं आता कि इनका प्रेम मात्र एक दिखावा है और अन्तमें इसका परिणाम भयावह हो सकता है; अतः हिन्दू युवतियोंको सावधान होनेकी आवश्यकता कि इनके छद्म प्रेमजालमें न आएं !

****

'एनसीइआरटी'में बिना किसी साक्ष्यके पढाए जा रहे औरंगजेब व शाहजहांद्वारा मन्दिर निर्माणका विषय हुआ उजागर

मुगलोंका महिमामण्डन मुख्यधाराकी 'मीडिया'से लेकर 'सोशल मीडिया'पर उदारवादियों और वामपन्थियोंद्वारा प्राय: किया जाता है। यहांतक भी कहा जाता है कि औरंगजेब जैसे आक्राताओंने भी भारतमें रहते हुए मन्दिरोंकी रक्षा की और उनकी 'देखरेख' की थी; परन्तु क्या आपको ज्ञात है कि विद्यालयोंमें जिस पाठ्यक्रममें हमें 'एनसीइआरटी' यह सब बातें दशकोंसे पढाते आई है, उसके पास इसकी पुष्टिके लिए कोई आधिकारिक विवरण ही विद्यमान नहीं है।

इस 'आरटीआई'में विशेष रूपसे उन स्रोतोंकी मांग की गई, जिनमें 'एनसीइआरटी'की कक्षा-१२ की इतिहासकी पुस्तकमें यह बताया गया था कि 'जब (हिन्दू) मन्दिरोंको युद्धके अन्तराल नष्ट कर दिया गया था, तब भी उनके जीर्णोद्धारके लिए शाहजहां और औरंगजेबद्वारा अनुदान दिए गए।

डॉक्टर इन्दु विश्वनाथनद्वारा 'एनसीइआरटी'द्वारा 'आरटीआई'के अनुरोधके इस उत्तरकी प्रति 'ट्वीट' की है और इसपर प्रतिक्रिया करनेवाले सभी लोग अचम्भित हैं। इन्दु विश्वनाथनने अपने 'ट्विटर' थ्रेडमें लिखा है, "दूसरे शब्दोंमें, भारतीय विद्यालयकी पाठ्यपुस्तकें यह बता रही हैं कि ये आतताई वास्तवमें उदार और हिन्दुओंके प्रति दयावान थे; परन्तु इन पुस्तकोंको प्रकाशित करनेवाला सङ्गठन कोई साक्ष्य देनेमें असमर्थ है।"

इन्दु विश्वनाथन लिखती हैं कि इसके पश्चात भी ये झूठ वैकल्पिक-वास्तविकता बनानेवाली 'मशीनरी'का अंग बने हुए

हैं और जब हिन्दू मात्र सत्यकी मांग कर रहा है तो इसके लिए उन्हें भयानक 'इस्लामोफोबिक कट्टरपन्थियों'की संज्ञा दी जाती है।

इस विषयमें सम्बन्धित सभी अधिकारी दण्डके पात्र हैं। भारत शासन इस विषयमें त्वरित संज्ञान ले और ऐसी सभी पाठयपुस्तकोंमें ऐसे झूठे प्रकरणोंको हटाए।

****

जिहादियोंने शाहनाजके ६ माह पूर्व विवाहित पतिकी कर दी हत्या, शव पाया गया सार्वजनिक शौचालयमें

देहलीके नोएडामें एक २७ वर्षीय युवक राधे चौहानकी हत्या कर दी गई है। उसका शव नोएडाके एक 'मेट्रो स्टेशन'के सार्वजनिक शौचालयमें रक्तरंजित पाया गया। सूचना मिलते ही पुलिसने उसके शवको अपने अधिकारमें ले लिया है और शव विच्छेदन हेतु भेज दिया है। उक्त युवक नौएडाके सेक्टर ५५ की एक 'झोपड बस्ती'का रहनेवाला है।

राधेने छह माह पूर्व एक मुसलमान युवती 'शाहनाज'से प्रेम-विवाह रचाया था। सम्भवतः इसी अन्तरजातीय विवाहके कारण ही जिहादियोंद्वारा राधेकी हत्या कर दी गई है। राधे और 'शाहनाज'के विवाहके किसी भी प्रकारके प्रलेख प्राप्त नहीं हुए हैं। अन्य लोगोंसे भी पुलिसद्वारा पूछताछ की जा रही है। मृतककी पत्नी शाहनाजसे भी पूछताछ करनेके प्रयास किए जा रहे हैं; किन्तु हत्यारा अभीतक पुलिसद्वारा नहीं पकडा जा सका।

मृतकके पाससे पुलिसको एक चाकू प्राप्त हुआ है और एक

अन्य चाकू उसी शौचालयसे भी प्राप्त हुआ है । आसपासके सीसीटीवी'के सभी कैमरोंकी जांच की जा रही है । मृतकके परिजनने उसे मादक द्रव्योंका व्यसनी बताया है।

पहले भी किसी हिन्दूद्वारा मुस्लिम युवतीसे विवाह करनेपर उनकी हत्या की जाती रही है; अतः पुलिस, इस प्रकरणका अन्वेषण इस दृष्टिसे भी करे ! (१४.०१.२०२१)

****

जगन्नाथ मन्दिरके विषयमें असत्य प्रसारित करनेपर देवदत्त पटनायकके विरुद्ध पुरीमें परिवाद प्रविष्ट

छद्म 'माइथोलॉजी' विशेषज्ञ देवदत्त पटनायकके विरुद्ध ओडिशाके भुवनेश्वर जनपदमें परिवाद प्रविष्ट कराया गया है । पटनायकके विरुद्ध यह परिवाद (शिकायत) ओडिशाके पुरी जगन्नाथ मन्दिरके विषयमें असत्य प्रसारितकर हिन्दू समाजमें जातिके आधारपर विभाजनको लेकर किया गया है। कार्यकर्ता अनिल बिस्वालने पुरीके भगवान जगन्नाथके विरुद्ध असत्य व अपमानजनक 'ट्वीट' करने व जगन्नाथ भक्तोंकी धार्मिक भावनाओंको आहत करनेपर भुवनेश्वरके पुलिस स्टेशनमें उनके विरुद्ध यह परिवाद प्रविष्ट करवाया है। उनका कहना है कि पटनायक जानबूझकर जगन्नाथ मन्दिर व हिन्दू परम्पराओंको अपमानित करनेका प्रयास कर रहे हैं । उसके ऐसा पुनः-पुनः करनेका इतिहास भी है । उन्होंने यह भी कहा कि श्रीजगन्नाथ मन्दिरमें किसी भी हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिखके प्रवेशपर कोई प्रतिबन्ध नहीं है; परन्तु स्वघोषित 'माइथोलॉजीस्ट' पटनायकने कहा कि दलित जातिके व्यक्तियोंको मन्दिरमें प्रवेशकी अनुमति नहीं है । वहीं मन्दिरमें

सेवा देनेवालोंकी एक बडी सङ्ख्या ब्राह्मण नहीं है । उन्होंने अपने परिवादमें धार्मिक भावनाओंको आहत करनेके लिए 'आईपीएस'की धारा २९५ए, ५००, ५०५ व 'आईटी' अधिनियम धारा ६७ के अन्तर्गत कार्यवाही करनेका अनुरोध किया है । उल्लेखनीय है कि देवदत्त पटनायकका सामाजिक जालस्थलद्वारा लोगोंपर अभद्र भाषामें टिप्पणी करनेका इतिहास भी है । वह नित्य प्रतिदिन हिन्दू मान्यताओंको लेकर असत्य प्रसारित करते हैं । ऐसी अनेक उदाहरण हैं, जब इस तथाकथित विशेषज्ञने असभ्य टिप्पणी' व अभद्र भाषाका उपयोग किया है । हिन्दू 'फोबिया'से ग्रसित देवदत्त पटनायकको सामाजिक जालस्थलपर लोगोंद्वारा देवदत्त 'नालायक' कहकर भी पुकारा जाता है । अपने पिछले 'ट्विट'में उन्होंने भगवान हनुमानका भी उपहास किया था ।

पाकिस्तान जैसे राष्ट्रोंमें ईशनिन्दा करनेपर कठोर दण्डका प्रावधान है; परन्तु यह भारत भूमि ही है, जहां ऐसे कथित बुद्धिजीवी हिन्दू देवी-देवताओंके अपमान जैसे कुकृत्य सतत करते हैं । अब समय आ गया है कि हम इन धर्म विरोधियोंका पूर्ण विरोध करते हुए समाजमें इनका सत्य उजागर करें और शासनसे ऐसे कुकृत्योंपर दण्डविधान बनानेकी मांग करें !

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है । यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके

अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं । इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें । कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. नमस्कारसे सम्बन्धित शास्त्र,१५ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. नामजप कब, कहां और कितना करें ? १९ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

इ. योगनिद्रा २५ जनवरी रात्रि ७.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा,

यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है। इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915